

## मध्यकालीन और आधुनिक भारतीय साहित्य

### प्रलम्ब के लिये:

शास्त्रीय संस्कृत साहित्य, वेद, उपनिषद, पुराण, प्राचीन बौद्ध साहित्य, प्राचीन जैन साहित्य, प्रारंभिक द्रविड़ साहित्य, मध्यकालीन साहित्य, मध्यकालीन साहित्य में रुझान, आधुनिक भारतीय साहित्य

### मेन्स के लिये:

मध्यकालीन और आधुनिक भारतीय साहित्य की विशेषताएँ, मध्यकालीन भारतीय साहित्य में धर्म और समाज का प्रभाव, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान राष्ट्रीय पहचान को आकार देने में आधुनिक भारतीय साहित्य की भूमिका।

मध्यकालीन से लेकर आधुनिक काल तक का भारतीय साहित्य देश की समृद्ध सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को दर्शाता है। **मध्यकालीन भारतीय साहित्य (600-1700 ई.)** कषेत्रीय भाषाओं, **भक्ति काव्य** और **सुफ़ी रहस्यवाद** के उदय के साथ फला-फूला, जिससे सामाजिक और धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा मिला। **कबीर**, **मीरा बाई** और अमीर खुसरो जैसे कवयियों ने स्थानीय भाषाओं का उपयोग करके साहित्य को लोकतांत्रिक बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**उपनिवेशवाद, राष्ट्रवाद और कषेत्रीय प्रभावों से प्रभावित आधुनिक भारतीय साहित्य** (19वीं सदी के अंत से 21वीं सदी के प्रारंभ तक) ने विविध विधाओं तथा शैलियों के माध्यम से आधुनिक विश्व की जटिलताओं को दर्शाया है, जिसमें हंदी, बंगाली, ओड़िया एवं अन्य भाषाओं का उदय हुआ, जो गतिशील सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों को दर्शाती हैं तथा भारत के विविध साहित्यिक परदृश्य में योगदान देती हैं।

## मध्यकालीन भारतीय साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

- **मध्यकालीन भारतीय साहित्य के चरण**
  - **प्रारंभिक मध्यकालीन भारतीय साहित्य (7वीं से 14वीं शताब्दी)** : इस अवधि में दक्षिण भारत में **अलवार और नयनमार** जैसे भक्ति कवयियों का उदय हुआ, जिनोंने शास्त्रीय संस्कृत और तमिल रचनाओं से अलग साहित्य का निर्माण किया।
  - **उत्तर मध्यकालीन भारतीय साहित्य (14वीं से 18वीं शताब्दी)**: इस युग में **कबीर**, **गुरु नानक**, **तुलसीदास** और अन्य जैसे साहित्यिक दिग्गजों ने साहित्यिक परदृश्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।
- **मध्यकालीन भारतीय साहित्य में भाषाई परदृश्य भाषा संबंधी संघर्ष:**
  - लेखकों को **पल्लव और चोल राजवंशों** के शाही संरक्षण द्वारा समर्थित संस्कृत तथा भक्ति आंदोलन के माध्यम से प्रमुखता प्राप्त करने वाली स्थानीय भाषाओं के बीच चयन करने की चुनौती का सामना करना पड़ा।
  - शिव और वैष्णवों द्वारा शुरू किये गए भक्ति आंदोलन ने वैष्णवों के बीच **थेनकलाई** (तमिल के पक्ष में) और **वडकलाई** (संस्कृत के पक्ष में) स्कूलों में विभाजन किया।
  - **अपभ्रंश काल (700 ई. - 1000 ई.):**
    - यह काल मध्यकालीन **भारतीय-आर्य भाषाओं** के अंतिम चरण को चिह्नित करता है, जहाँ **अपभ्रंश** प्राकृत से व्युत्पन्न एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक भाषा के रूप में उभरी। हालाँकि प्रारंभ में इसे नमिन् माना जाता था, लेकिन अंततः इसे एक वैध साहित्यिक भाषा के रूप में मान्यता दी गई।
  - **पाली का पतन:**
    - **बौद्ध साहित्य** की प्रमुख भाषा रही पाली की स्थिति 12वीं शताब्दी के बाद कम हो गई, जिसमें **पद्य चूडामणि** और **जनिचरति** जैसी उल्लेखनीय रचनाएँ पाली में लिखी गईं अंतिम महत्त्वपूर्ण रचनाओं में से थीं। इसके बाद संस्कृत **बौद्ध धर्म** की प्राथमिक साहित्यिक भाषा के रूप में उभरी।
  - **संस्कृत की स्थिति:**
    - **संस्कृत** को शक्ति अभिजात वर्ग की भाषा के रूप में सम्मान दिया जाता था, जो मुख्य रूप से ब्राह्मणों द्वारा बोली जाती थी और पूरे भारत में साहित्यिक भाषा के रूप में कार्य करती थी। अपनी प्रतिष्ठा के बावजूद यह आम जनता द्वारा व्यापक रूप से नहीं बोली जाती थी और इसके साहित्यिक कार्यों में **वेद**, **पुराण** एवं **उपनिषद** शामिल थे।
    - **संस्कृत साहित्य:**
      - पाल साम्राज्य संस्कृत साहित्य में अपने योगदान के लिये प्रसिद्ध था। मदन पाल के शासनकाल के दौरान, बंगाली

कवि **संध्याकर नंदी की रामचरित** और **श्रीधर नंदी की न्यायकंदली**, **तत्त्वप्रबोध**, **तत्त्वसंगबदनी** तथा **तत्त्व संग्रह टीका** जैसी प्रमुख रचनाएँ प्रसिद्ध थीं।

- अन्य महत्त्वपूर्ण योगदानों में **चक्रपाणिदत्ता की चकित्सा संग्रह**, **आयुर्वेद दीपिका**, **भानुमती** और **जमुितबाहाना की दयाभाग** शामिल हैं।
- सेन राजवंश में, **बललाल सेन के दान-सागर**, **अद्वुत-सागर** और **प्रतषिठा-सागर** ने हट्टि शास्त्र को समृद्ध किया।
  - जयदेव की **गीत गोवदा** और **धोयी की मेघदूत** भी इस काल की प्रमुख रचनाएँ थीं।

#### ○ तमिल की स्थिति:

- तमिल, जिसे भारत की सबसे पुरानी भाषाओं में से एक माना जाता है, की साहित्यिक परंपरा बहुत समृद्ध रही है, विशेषकर **संस्कृत साहित्य** में। इसने एक महत्त्वपूर्ण पाठक वर्ग बनाए रखा और अपने प्राचीन स्वरूप से काफी विकसित हुई, जिसमें प्राचीन और आधुनिक दोनों विशेषताएँ प्रतबिंबित होती हैं।

#### ● तमिल साहित्य:

- **चोल काल** में तमिल साहित्य अपने चरम पर था। इस काल की सबसे प्रसिद्ध तमिल कृतियों में से एक **कंबन** द्वारा रचित **'रामावतारम'** है।
- **अव्वैयार** ने **रामायण** और **महाभारत** से प्रेरणा लेकर **'अथचिड्डी'** और भीमकवि ने **'राघव-पडवयि'** लिखा।

#### ■ मध्यकालीन भारतीय साहित्य का सांस्कृतिक परिदृश्य

- **लोक साहित्य का वनिश:** मध्यकालीन साहित्य का अधिकांश हिस्सा या तो **धार्मिक** था या **अभिजात वर्ग के लिये था**, आम लोगों के मनोरंजन के लिये कम रचनाएँ बनाई गईं। अपर्याप्त संरक्षण के कारण ये लोकप्रिय रचनाएँ अक्सर बच नहीं पाईं।
- **प्रसारण के तरीके:** साहित्य निर्माण को **सीमित संसाधनों और उच्च नरिक्षरता दर** जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिसके कारण अधिकांश साहित्य पेशेवर कहानीकारों और कलाकारों द्वारा मौखिक रूप से प्रसारित किया गया। मौन वाचन असामान्य था, और केवल धार्मिक, शैक्षणिक संस्थान और धनी लोग ही पुस्तकालय बनाए रख सकते थे।
- **प्रदर्शन के स्थान:** साहित्य या तो शाही दरबारों के लिये या आम जनता के लिये रचा जाता था। दरबारी कविताएँ वशिष्ट होती थीं, जो राजाओं और कुलीन वर्ग के लिये होती थीं, जबकि मंदिर में होने वाले प्रदर्शन सामाजिक स्थितिकी परवाह कथि बना बड़े, विविध दर्शकों को ध्यान में रखकर कथि जाते थे।
- **लेखकों की स्थिति:** दरबारी कवि मुख्य रूप से प्रतषिठि पृष्ठभूमि से आए शक्ति ब्राह्मण थे, जबकि आम जनता के कवियों में नमिन जातियों सहित विभिन्न सामाजिक स्तरों से आए सम्मानित संत कवि शामिल थे। उल्लेखनीय महिला लेखिकाएँ दुर्लभ थीं, जिनमें **अकका महादेवी** और **कराईकल अम्मैयार** जैसी प्रमुख हस्तियाँ शामिल थीं।
- **श्रोता गतिशीलता:** साहित्य को आकार देने में श्रोताओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, संस्कृत कविता मुख्य रूप से कुलीन समूहों को लक्षित करती है जिन्हें **गोष्ठी के रूप में जाना जाता है**, जिससे **अकादमिक चर्चा (शास्त्रगोष्ठी)** और **रचनात्मक लेखन (वदिग्धा गोष्ठी) की सुविधा मिलती है**। कवि अक्सर तात्कालिक अपील और मनोरंजन पर ध्यान केंद्रित करते थे, जिसके परिणामस्वरूप अभिजात वर्ग के दर्शकों के लिए एक सजावटी और कामुक शैली तैयार की गई।

## मध्यकालीन भारतीय साहित्य पर धर्म का क्या प्रभाव था?

- **धार्मिक संप्रदायों का उद्भव:** मध्ययुगीन काल में **बौद्ध धर्म** और **जैन धर्म** में गरिब के साथ-साथ विभिन्न धार्मिक संप्रदायों, विशेष रूप से ब्राह्मण धर्म का उदय हुआ।
  - इस युग में मंदिर निर्माण, मूर्ति पूजा और वसित्त अनुष्ठानों में वृद्धि देखी गई। ब्राह्मणवाद ने **त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु और शिव की त्रयी)** की अवधारणा विकसित की, जो **दिव्य पूजा की बहुमुखी प्रकृति को दर्शाती है**।
- **सांप्रदायिक प्रभाव:** यह काल विभिन्न संप्रदायों के बीच तनाव और अंतरक्रियाओं से चहिनति था, विशेष रूप से **शैव (शिव की पूजा) और वैष्णव (विष्णु की पूजा)** तथा **शक्तिवाद (देवी की पूजा)** के बीच।
  - **पुराणों** ने इन संप्रदायों को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, **भागवत पुराण** जैसे ग्रंथ वैष्णववाद के लिये आधारभूत साहित्य के रूप में कार्य करते हैं, जबकि **भारकण्डेय पुराण शक्तिवाद** के लिये महत्त्वपूर्ण था।
- **पुराणों की भूमिका:** पुराणों में देवताओं की वंशावली, मथिक और कथाएँ शामिल थीं जो **लोकप्रिय धार्मिक चेतना** को आकार देने में महत्त्वपूर्ण थीं।
  - सांप्रदायिक हितों के आधार पर वर्गीकृत 18 प्रमुख पुराणों ने **धार्मिक विचारधाराओं को संरक्षित और बढ़ावा दिया** और इनके साथ एक द्वितीयक साहित्य भी था जिसे **उप-पुराण** के रूप में जाना जाता है।
  - इन ग्रंथों ने सृष्टि, ब्रह्मांडीय चक्रों और शाही वंशों के बारे में अंतरदृष्टि प्रदान की, जिससे सामाजिक और सांस्कृतिक प्रथाओं पर प्रभाव पड़ा।
- **पवतिर भूगोल:** महाकाव्य **महाभारत** और **रामायण** ने पुराणों के साथ मलिकर भारत के पवतिर भूगोल में योगदान दिया। उन्होंने उस समय के राजनीतिक विखंडन के बावजूद पवतिर पर्वतों, नदियों और वनों की विशेषता वाले एकीकृत पवतिर स्थान की भावना को जगाया। इस साहित्यिक चित्रण ने जनता के बीच एक सामूहिक धार्मिक पहचान को बढ़ावा दिया।
- **यथार्थवाद और पौराणिक तत्व:** मध्यकालीन भारतीय साहित्य में **अलौकिक तत्व वदियमान** थे, लेकिन इसमें यथार्थवाद की प्रबल भावना भी सम्मिलित होने लगी, विशेष रूप से 9वीं और 10वीं शताब्दी में।
  - साहित्यिक रचनाओं ने रोज़मर्रा के जीवन को स्पष्ट रूप से चित्रित करना शुरू कर दिया, जिससे विश्व को भ्रम के रूप में देखने और मानवीय अनुभवों को पहचानने के बीच के तनाव पर प्रकाश डाला गया।
  - यह यथार्थवाद विशेष रूप से संकलनों और बौद्ध सहजिया काव्य में स्पष्ट था, जो वास्तविक जीवन की स्थितियों को प्रामाणिक रूप से प्रतबिंबित करता था।
- **उल्लेखनीय कवि और दार्शनिक:**
  - **शंकर (8वीं शताब्दी):** **अद्वैत वेदांत** के एक प्रमुख व्यक्तित्व, उन्होंने अद्वैत और पृथकता (माया) के भ्रम पर जोर दिया।
  - **रामानुज (11वीं-12वीं शताब्दी):** उन्होंने **वशिष्टाद्वैत** को प्रारंभ किया, जिसमें एक योग्य अद्वैतवाद की वकालत की गई, जिसने भौतिक

संसार को ब्रह्म की अभिव्यक्ति के रूप में मान्यता दी।

## मध्यकालीन भारतीय साहित्य पर भक्तिआंदोलन का क्या प्रभाव था?

- **भक्तपूरण ध्यान:** भक्तिआंदोलन ने चुने हुए देवता के परतव्यक्तगित भक्तपर ज़ोर दिया, जसै अकसर प्रेम कवता के माध्यम से व्यक्त कया जाता था। **कृष्ण और राम** जैसे केंद्रीय चरतिर दविय प्रेम का परतनिधित्व करते थे, जो प्रेमी या बालक के समान व्यक्तगित संबंध को दर्शाता था, जसिने आध्यात्मकता को आम व्यक्तके लयि सुलभ बना दिया।
- **समन्वयवाद और धार्मिक सद्भाव:** इस आंदोलन ने **हिंदू धर्म** और **इस्लाम** के तत्वों को सम्मशिरति करते हुए वविधि धार्मिक परंपराओं के बीच एकता को बढ़ावा दिया।
  - **कबीर, गुरु नानक** और अन्य जैसे उल्लेखनीय कवयिों ने सार्वभौमिक भाईचारे का संदेश दिया, सांप्रदायिक वभिजन को पार कया और इस वचिर को बढ़ावा दिया कि ईश्वर परत्येक व्यक्तमें नवास करता है।
- **क्षेत्रीय भाषा और साहित्य:** भक्तिकाव्य स्थानीय भाषाओं में रचा गया, जसिसे आध्यात्मिक साहित्य आम जनता के लयि अधिक प्रासंगिक और समझने योग्य बन गया। इससे क्षेत्रीय भाषाओं का विकास हुआ, जसिसे एक समृद्ध साहित्यिक परंपरा का निर्माण हुआ जसिमें हदिी में **मुलसीदास**, राजस्थानी में **मीरा बाई** और कन्नड़ में **बसवन्ना** जैसे उल्लेखनीय व्यक्तशामलि थे।
- **सामाजिक सुधार और जाति-वशिधी भावना:** भक्तिआंदोलन ने कठोर जाति व्यवस्था को चुनौती दी, मानवता की पूजा की वकालत की और इस वचिर को बढ़ावा दिया कि ईश्वर की भक्तिसभी के लयि सुलभ है, चाहे उनकी जाति या सामाजिक स्थिति कुछ भी हो। आंदोलन के कई कवि नचिली जाति की पृष्ठभूमिसे थे, जसिने आंदोलन को सामाजिक पदानुक्रम के परतएक नमिनस्त्रीय परतकिरयि के रूप में स्थापति कया।
- **व्यक्तगित और रहस्यवादी अनुभव:** इस आंदोलन ने कर्मकांडीय प्रथाओं या धार्मिक वदिवत्ता पर नरिभर रहने के बजाय ईश्वर के परत्यक्ष, व्यक्तगित अनुभवों पर ज़ोर दिया। इस अनुभवात्मक दृष्टिकोण ने रहस्यवाद के एक ऐसे रूप को जन्म दिया जो सांसारिकता को ईश्वर से जोड़ने का प्रयास करता था, जसिसे भावनात्मक गहराई और आध्यात्मिक अंतरदृष्टिसे भरपूर कवतिएँ बनती थीं।
- **वविधि काव्य रूप:** भक्तिआंदोलन ने प्राचीन महाकाव्यों और स्थानीय परंपराओं के तत्वों को शामिल करते हुए वभिनिन काव्य रूपों के विकास में योगदान दिया। गीतात्मक अभिव्यक्ति पर ज़ोर देने से **प्रेम, भक्ति और सामाजिक टपिणी** के जटलि वषियों की खोज करने का अवसर मला, जसिसे एक वशिाल और वविधि कृति का निर्माण हुआ।
- **महिला कवयिों की भूमिका:** भक्तिआंदोलन में महिलाओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका नभाई, **मीरा बाई** और **लाल देव** जैसी कवयिों ने अपनी वाणी का उपयोग गहन आध्यात्मिक अंतरदृष्टि व्यक्त करने और सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने के लयि कया। उनके योगदान ने उस समय की लैंगिक गतशीलता को उजागर कया और आध्यात्मिक प्रवचन में महिलाओं के दृष्टिकोण के महत्त्व पर ज़ोर दिया।

## आधुनिक भारतीय साहित्य की प्रमुख वशिषताएँ क्या हैं?

- **आधुनिक भारतीय साहित्य का विकास:**
- आधुनिक भारतीय साहित्य, या **आधुनिक काल साहित्य**, एक वशिाल और वविधि साहित्यिक परदृश्य का परतनिधित्व करता है जो भाषाई और सांस्कृतिक सीमाओं से परे है।
- इसमें हदिी, बंगाली, ओडिया, असमिया, राजस्थानी और गुजराती जैसी भाषाएँ शामिल हैं, जो **उपनिवेशवाद, राष्ट्रवाद** और **क्षेत्रीय प्रभावों** से प्रेरति सामाजिक-राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को दर्शाती हैं।
- यह **ईस्ट इंडिया कंपनी** द्वारा लाई गई **पश्चिमी संस्कृति** के प्रभाव में उभरा। शकिषा और प्रशासन में अंगरेजी की शुरुआत ने इसे अभजित्य समाज में एकीकृत कर दिया, जसिसे लेखकों को इस भाषा को अपनाते की प्रेरणा मली।
- कोलकाता के हनिदू कॉलेज में **डोरोजयिन आंदोलन** ने इस बदलाव को गति दी, जसिमें **मधुसूदन भट्टाचार्य** और **बंकमि चंद्र चट्टोपाध्याय** जैसे शुरुआती लेखकों ने अगुवाई की।
- समय के साथ साहित्य एक क्रांतिकारी मानसकता की ओर वकिसति हुआ, जसिका उदाहरणरवींद्रनाथ टैगोर, शरत चंद्र चट्टोपाध्याय और **मुंशी प्रेमचंद** हैं।
- हाल के वर्षों में, **वैश्वीकरण** ने **चेतन भगत** और **अरुंधति राँय** जैसे समकालीन लेखकों की रचनाओं के वषियों को प्रभावति कया है, जो भारत के औपनिवेशिक अतीत से उपजे सामाजिक परिवर्तनों को परतबिबिति करते हैं।
- **हदिी साहित्य:**
- ब्रिटिश उपनिवेशी शासन के उदय ने हदिी साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन का संकेत दिया। इस समय के दौरान शास्त्रीय और संस्कृत के प्रभावों का पुनर्जीवन हुआ, साथ ही **राष्ट्रवाद** की भावना में भी वृद्धि हुई।
- 1850 के दशक में भारतेंदु हरशचंद्र जैसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ततिव सामने आए, जनिकी रचनाओं में "अंधेर नगरी" (अंधकार का शहर) शामिल है, जसिने आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा दी।
- **आधुनिक हदिी साहित्य के चरण:**
- **भारतेंदु युग (1868-1893)**
- **द्वविदी युग (1893-1918)**
- **छायावाद युग (1918-1937)**
- **समकालीन काल (1937-वर्तमान)**
- **मुंशी प्रेमचंद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'नराला'** और **महादेवी वर्मा** जैसे प्रमुख लेखकों ने सामाजिक न्याय और महिला संघर्ष जैसे वषियों पर अपनी वविधि कथाओं के माध्यम से हदिी साहित्य को समृद्ध कया है।
- **बंगाली साहित्य:**
- इसका विकास हदिी और उर्दू के साथ-साथ हुआ, जो अंगरेज़ वलियिम कैरी के कार्यों से प्रभावति था, जनिहोंने 1800 में बंगाल में बैपटसिट मशिन प्रेस की स्थापना की थी।
- साहित्यिक आंदोलन का नेतृत्व **राजा राम मोहन राय** और बंकमि चंद्र चट्टोजी जैसे दूरदर्शी लोगों ने कया और **आनंद मठ** ने राष्ट्रवादी

साहित्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका नभाई।

- प्रथम भारतीय नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर अपनी उत्कृष्ट कृति 'गीतांजलि' के साथ बंगाली साहित्य के प्रकाश स्तंभ बने हुए हैं।
- असमिया और उड़िया साहित्य:
  - असमिया साहित्य दरबारी इतिहास ("बुरंजियों") से आगे बढ़कर आम आदमी की पीड़ा और राष्ट्रवादी भावनाओं पर केंद्रित हो गया, जो पद्मनाभ गोहेन बरुआ जैसे लेखकों से प्रभावित था।
  - राधा नाथ रे और फकीर मोहन सेनापति जैसे आधुनिक लेखकों के माध्यम से ओड़िया साहित्य में पुनरुत्थान देखा गया, जिनकी रचनाओं में मज़बूत राष्ट्रवादी वषियवस्तु व्यक्त की गई।
- गुजराती साहित्य:
  - भक्ति आंदोलन ने गुजराती साहित्य को काफी प्रभावित किया, नरसहि मेहता जैसे कवियों ने भक्ति गीतों की रचना की।
  - गोवर्धन राम द्वारा रचित सरस्वती चंद्र जैसे क्लासिक उपन्यास और डॉ. के.एम. मुंशी की ऐतिहासिक कृतियाँ गुजराती साहित्य में समृद्ध कथात्मक परंपरा का प्रतीक हैं।
  - राजस्थानी साहित्य:
    - इसमें वविधि बोलियाँ शामिल हैं, जिनमें ढोला मारू जैसे मध्ययुगीन ग्रंथों और मीराबाई जैसे संतों की भक्ति कविताओं का महत्त्वपूर्ण योगदान है। यह साहित्य क्षेत्र के सांस्कृतिक लोकाचार तथा आध्यात्मिक मान्यताओं को समाहित करता है।
  - संधी और कश्मीरी साहित्य:
    - संधी साहित्य में राजस्थान और गुजरात के प्रभावों का मशरूण प्रतबिबिति होता है, जसि सूफीवाद और इस्लामी प्रवासियों ने आकार दिया है।
    - उल्लेखनीय लेखकों में दीवान कौरमल और मरिज़ा कलीच बेग शामिल हैं।
    - कश्मीरी साहित्य एक समृद्ध इतिहास से प्रेरित है, जसिमें कल्हण की राजतरंगिणी और लाल देद की रहस्यवादी कविता जैसे प्राचीन ग्रन्थों के साथ-साथ बाद के सूफी प्रभाव भी शामिल हैं।
  - पंजाबी साहित्य:
    - पंजाबी साहित्य को पुनर्जीवित करने के हालिया प्रयासों से इस पर फारसी और गुरुमुखी लिपियों का प्रभाव उजागर होता है।
    - धार्मिक ग्रंथ आदिग्रंथ एक उत्कृष्ट कृति के रूप में सामने आता है, जबकि हीर-रांझा जैसी कहानियाँ क्षेत्रीय कहानी कहने की परंपराओं को प्रतबिबिति करती हैं।
    - बाबा फरीद और बुल्ले शाह की सूफी कविता ने भी आधुनिक पंजाबी साहित्य को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका नभाई है।
  - मराठी साहित्य:
    - ज्ञानेश्वर (जनिहें ज्ञानेश्वर, ज्ञानदेव, ज्ञानेश्वर वटिठल कुलकर्णी या मौली के नाम से भी जाना जाता है) पहले मराठी लेखक थे जिनके व्यापक पाठक थे और उनका गहरा प्रभाव था, उनकी कुछ रचनाएँ 'अमृतानुभव' और 'भावार्थ दीपिका' थीं।
    - भक्ति संत नामदेव इस युग के अन्य महत्त्वपूर्ण साहित्यिक व्यक्तित्व हैं। उन्होंने मराठी के साथ-साथ हिंदी में भी धार्मिक गीत रचे। उनकी कुछ हिंदी रचनाएँ सखियों के पवतिर ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहबि में शामिल की गई।
    - एक अन्य मराठी लेखक मुकुंदराज थे जनिहोंने 'वविक सधु' और 'परमामृत' लिखी।
    - राष्ट्रवादी आंदोलन ने बाल गंगाधर तलिक और एम.जी. रानाडे जैसे लेखकों को प्रेरित किया, जसिसे एक समृद्ध साहित्यिक परंपरा का जन्म हुआ, जो महाराष्ट्र की सांस्कृतिक वरिसत को प्रतबिबिति करती है।

## औपनिवेशिक काल के दौरान आधुनिक भारतीय साहित्य ने भारतीय राष्ट्रीय पहचान को किस प्रकार आकार दिया?

- राष्ट्रवाद में भारतीय लेखकों की भूमिका:
  - बंकिम चंद्र चटर्जी (1838-1894): वे राष्ट्रवाद को भारतीय परंपराओं के साथ मलाने वाले पहले लोगों में से एक थे। दुर्गेश नंदनी (1865) और आनंद मठ (1882) जैसे उनके ऐतिहासिक उपन्यास राष्ट्रवादी एवं देशभक्ति के मूल्यों को स्थापित करने के लिये लोकप्रिय हुए, जसिसे राष्ट्रवाद भारतीय धर्म का एक हसिसा बन गया।
    - उनकी रचनाओं में भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर से प्रेरित होकर भारतीयों को उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया है।
  - रवींद्रनाथ टैगोर (1861-1942): वे एक अन्य महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व थे, जनिहोंने संघवाद और वविधिता में एकता पर ज़ोर देकर राष्ट्रवाद को पुनर्परभाषित किया।
    - टैगोर का राष्ट्रवाद भारत की आध्यात्मिक परंपराओं से जुड़ा हुआ था तथा सहष्णिता और बहुलवाद पर केंद्रित था।
    - उनकी रचना गोरा (1910) उपनिवेशवाद को दी गई उनकी चुनौती तथा भारतीय राष्ट्रवाद को समावेशी और वविधितापूर्ण रूप में प्रस्तुत करने का प्रतबिबिति है।

- देशभक्ति साहित्य और सुधारवाद:
- 19वीं और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में, कई भारतीय भाषाओं में देशभक्ति साहित्य की लहर उठी।
- रंगलाल (बंगाली), भारतेंदु हरिश्चंद्र (हिंदी) और मरिजा गालबि (उर्दू) जैसे लेखकों ने औपनिवेशिक शासन का विरोध करने और भारत की वरिासत का महामामंडन करने के लिये साहित्य का उपयोग किया। उनके कामों ने वदिशी वर्चस्व का विरोध करने के साथ-साथ आंतरिक सामाजिक सुधारों की जरूरत को भी संबोधित किया।
- तमलि कवि सुब्रमण्य भारती (1882-1921) ने देशभक्ति को सामाजिक सुधार के मुद्दों से जोड़ा। उन्होंने राष्ट्रीय एकता और असंपृश्यता जैसी सामाजिक बुराइयों के उनमूलन पर ध्यान केंद्रित करते हुए तमलि कविता में एक नई क्रांतिकी सूत्रपात किया।
- ऐतहासिक उपन्यास राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने का एक लोकप्रिय माध्यम थे। हरि नारायण आपटे (मराठी) और बंकिम चंद्र चटर्जी (बंगाली) जैसे लेखकों ने भारतीयों को उनके गौरवशाली अतीत की स्मृति दिलाने तथा ब्रिटिश शासन के वरिद्ध संघर्ष को प्रेरित करने के लिये लेखन किया। इन उपन्यासों ने राष्ट्र के प्रति दायित्व की भावना को बढ़ावा दिया और स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिये संघर्ष का आह्वान किया।
- पुनरुत्थानवाद और सामाजिक सुधार:
  - भारतीय भाषाओं के शुरुआती उपन्यासों, जैसे एच. कैथरीन मुलेंस द्वारा रचित फुलमनी ओ करुणार बबिरन (1852, बंगाली), प्रताप मुदलियार चरतिरम (1879, तमलि) और श्री रंगराज चरतिर (1872, तेलुगु) ने असंपृश्यता, जाति आधारित भेदभाव तथा वधिवा पुनर्विवाह के नषिध जैसी सामाजिक बुराइयों को संबोधित किया।
  - इन लेखकों ने भारत के सांस्कृतिक मूल्यों के पुनरुद्धार का समर्थन किया, साथ ही सुधार के लिये जोर दिया और रूढ़िवादी प्रथाओं को चुनौती दी।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)

????????

प्रश्न. भारत के सांस्कृतिक इतहास के संदर्भ में, नमिनलखिति युग्मों पर वधिार कीजिये- (2020)

1. परविराजक - परतियागी व भ्रमणकारी
2. श्रमण - उच्च पद प्राप्ति पुजारी
3. श्रमण - उच्च पद प्राप्ति पुजारी

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-से सही सुमेलित हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 1 और 3
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

प्रश्न. भारत के सांस्कृतिक इतहास के संदर्भ में, 'परामति' शब्द का सही वविरण नमिनलखिति में से कौन-सा है?(2020)

- (a) सूत्र पद्धति में लिखे गए प्राचीनतम धर्मशास्त्र पाठ
- (b) वेदों के प्राधिकार को अस्वीकार करने वाले दार्शनिक संप्रदाय
- (c) परंप्रणताएँ जिनकी प्राप्ति से बोधसित्व पथ प्रशसत हुआ
- (d) आरंभिक मध्यकालीन दक्षिण भारत की शक्तिशाली व्यापारी श्रेणियाँ

उत्तर : (c)

प्रश्न. भारत के धार्मिक इतहास के संदर्भ में, नमिनलखिति कथनों पर वधिार कीजिये- (2020)

1. स्थवरिवादी महायान बौद्ध धर्म से संबद्ध हैं।
2. लोकोत्तरवादी संप्रदाय बौद्ध धर्म के महासंघिक संप्रदाय की एक शाखा थी।
3. महासंघिकों द्वारा बुद्ध के देवत्वरोपण ने महायान बौद्ध धर्म को प्रोत्साहित किया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

?????

प्रश्न. भारत में बौद्ध धर्म के इतिहास में पाल काल अति महत्त्वपूर्ण चरण है। विश्लेषण कीजिये। (2020)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/medieval-and-modern-indian-literature>

